

हमिखूवमंथपिठ पापिनन का तथे सहकि॥ ॥ पित
नं वपनिषागी सऊनानां विनिन्दकः। लयापिरेपनिषागी शानी
यनन का तथे ॥ १४॥ वव्यातापनिषागया क मं हानीजनप
निनिन्दाया क मं कलत काय मावा क माया म ड मं हया वन
नक सतिव॥ ॥ हरानवस्यं के नया ड के हनिवा सनाप

आशा सरकाधि

527

ASHA ARCHIVES

वसिष्ठ उवाच ॥ अथ प्रामाणीयतामिह ॥ १५ ॥ इति नयाय एव पुरुष
 वक्त्रं हनिवास्तु तं न न वक्त्रं पर्यकात् स मेध नया के मेध
 विद्वयापि ह्या वन न के स ते यमात् ॥ ॥ श्रमान्यं वेदः ॥
 मुनिश्च श्रमान्यं देवता रथियाः ॥ श्रमान्यं विप्रः श्रान्ती न न के
 नाथ प्रामाण्य ॥ १६ ॥ वेदः श्राम्यतामान्यमया के मेध देवता ती

रथ निराया के मेध वाक्त्रं स हर्जन पनिक निराया वाक्त्रं
 वक्त्रं न न के स हर्क मात् विस्त न प्रमात् ॥ ॥ यः स्वयं वा
 श्राम्यतामान्यं वेदः श्राम्य विवर्जितः ॥ निर्दयः सर्व सत्त्व वक्त्रं
 पिनाथ मिह नय ॥ १७ ॥ गवक्त्रं वाक्त्रं श्राम्यतामान्यं वेदः श्राम्यः
 एदि वक्त्रं मद्र स प्रजनया के दया मद्र देव उ नया के दकि

मंश्चमूननकसमथामथानं हर्कमात॥ ॥ इतउवः॥ मर्य
तुकेगमिष्यामहवतानरुयावर्य। गृहककेवकनवनिवा
एवकुमहहि॥ १८॥ पूनवनि यमइतपनिपुनयमना
याकविनतियाहा हपरा कृत्पात्याशाहाननं पनिय
धीमधुतप्रवानगधीहगधीहकनसगधीहकप्रवाप्त

याहाअवानधखंशाहदप्रविषायमात॥ ॥ धीयमना
उवाच॥ ॥ यमाकंहिनिवासार्थं कृन्वैकामितत्तः॥ गृ
धर्षकिंकनाहर्षमर्त्यतुकेगतमति॥ १९॥ हकिंकनप
निमर्त्यमधुतवानवतस कृपनिवास्यायगुल्लनदका
ऊनकानहह॥ ॥ मूककेगीकृतावासाविवादकतहं

तथा। मरु के कसुमं नाफित उविअ ममावन ता॥ २०॥ ह्र
तग्वथायए मिसा केनया साहासानतयउव द्विर्धं कसुला
यउवथास संधा कासए कवंगलदवथास साननके
य हिं धतनतियमका वथास कृमि सनविअ मयाउ॥ ॥
एनलछुकितायउ कांसए एनंनलरुनां एनसथनना २

अथो यथाकं वासमीहण॥ २१॥ तका कलरापूठा वगव
थास कासरयति सनेवथास कडूकथास कृयो पेनिवानया
मंला कथायस थथो हथास कृ पेनि सनेवासयाव॥ ॥
ममनउकव के वनरीगीन कउयाथा महि घीखनवास
प्रयउ तसिनिवासय॥ २२॥ ममनसुगम हसिमाकास व

हा नीनसु पंदाकाताकथास प्रसयागतसु मध्यागतसु एव
 मिमन्तुवाहेयाव ॥ ॥ नीलं लघुसमीपं च सुनाकं लोकि
 कथयो ॥ लग्नरूपं कंटकाद्यविभ्रमं नान्यथा लवता ॥ २३ ॥
 बाहिकाहयासमीपसु ॥ अकातरवथासु वा सि ००० ॥ दि
 विपनिपमदूथसु ॥ अविथसु ॥ उठाववा चउथसु ॥ का

आत्म मरुकाथि

527